इसका कोई विकल्प नहीं

ब्रज श्रीवास्तव

6 से 14 वर्ष की आयु प्राकृतिक रूप में सीखने के लिए अद्भुत, अनुकूल और उपयुक्त होती है। इस आयु में सीखे गए पाठ से भविष्य की योजनाएँ, विषय की इमारत की नींव की गुणवत्ता तय हो जाती है। इस आयु में शाला में आया हुआ बच्चा सीखने के लिए लगभग तैयार होता है, इसी आधार पर अनेक शैक्षिक योजनाएँ, जिनमें की सी.सी.ई. भी है, लागू की जाने की सिफारिश की गई है। ये योजनाएँ अभी रस्ते में हैं और अपनी मंजिल तक पहुँचने का ख्वाब देख रही हैं।

शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, शिक्षा के क्षेत्र में दूसरे युग की शुरुआत मानी जा सकती है। इसके आलोक में न केवल बच्चे के प्रति सर्वाधिक तवज्जो के साथ समझ बनाने की अपेक्षा की गई है,बल्कि समाज का हर वर्ग इस तरफ ध्यान जरूर दे, ऐसा वातावरण बनाने की भी पहल की गई है। सभ्यता के विकास की यात्रा में जो मुख्य घटक है, वह नजरिए में बदलाव का भी है। हजारों सालों में मनुष्य यह जान पाया है कि मनुष्य या इंसान बनना ही एक मात्र उपलब्धि है, बकौल ग़ालिब -

बस एक दुशवार है हर काम का आसां होना,
आदमी को भी मयस्सर नहीं इंसान होना।

आदमी से इंसान होने की यात्रा क्या है, इसी यात्रा का नाम है शिक्षा, एजुकेशन या तालीम, कम से कम अपेक्षा तो यही रहती है शिक्षा नामक उपाय से। इसी सफर में एक बच्चा जब शामिल होता है तो वह किताबी ज्ञान से नहीं व्यवहारिक और मानवीय खुद के द्वारा निर्मित ज्ञान से और फिर उसके स्वाभाविक अमल से एक संवेदनशील और जिम्मेदार आदमी बन जाता है जिसे हम इंसान कह सकते हैं।

लेकिन ऐसा लगता है कि हम ऐसे फेर में पड़ गए हैं जिसमें बच्चा इंसान होने कि बजाय एक यंत्र में बदल रहा है, या फिर ऐसे आदमी के रूप में बड़ा हो रहा है जो जीवन को एक कोण से देखकर जीता चला जाता है। हमने उसे इम्तिहानों में बाँध दिया है। इम्तिहानों को और-और पारम्परिक बनाकर उसे मजबूर कर दिया है कि वो किताबों को रट डाले। हम बस परखने के फेर में लगे हैं बिना गुरु बने, बच्चे से अपेक्षा कर रहे हैं कि वह अपना शिष्यत्व दिखाता रहे भूल जाते हैं कि -

परखना मत परखने में कोई अपना नहीं रहता
किसी भी आईने में देर तक चेहरा नहीं रहता।

परखने का ऐसा कोई उपाय जिसमें लक्षित अपना न रहे, खतरनाक हो सकता है। यहाँ अपना शब्द से आशय है भावनाओं से भरा हुआ, या सम्बन्धों को या सहसम्बन्धों को समझने वाला व्यक्ति। मुझे यह कहने में कोई संशय नहीं है कि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की वर्तमान अनुशंसित प्रयोजना इस उद्देश्य को अपने कलेवर में समेटे हुए है।

सी.सी.ई. को बच्चों के बीच प्रोजेक्ट करने के पहले अधिगम संस्थान सहित शिक्षक को अपनी मान्यताओं को वर्तमान के बदलाव से प्रतिस्थापित करना पड़ेगा। इसके साथ-साथ मोनिटरिंग एजेंसीज को भी सकारात्मकता से इसे न केवल स्वीकारना होगा बल्कि इसको स्थापित करने के लिये कुछ जतन भी करने होंगे। अगर यह होता है तो मुमकिन है कि हमारा समुदाय भी इसे अंगीकार कर ले। स्कूल के प्रधानाध्यापक के रूप में इसे इम्प्लीमेंट करते हुए मेरे जो अनुभव हैं उसी आधार पर मैं यह लिख रहा हूँ कि बच्चों के साथ काम करते हुए हर घटक को केवल एक ही सूत्र को अपनाना होगा, वह है, धैर्य और उम्मीद के साथ प्रयास करते जाना।

हम अपनी शालेय दिनचर्या की शुरुआत प्रार्थना सभा से करते हैं। इस प्रार्थना को केवल अध्यात्मिक आनन्द की प्रेक्टिस न माना जाए, न ही इतनी बड़ी उम्मीद पाली जाए, बल्कि यहाँ केवल सामूहिकता का महत्व है, इसके बाद स्वमूल्यांकन को कक्षा में बच्चों द्वारा किया जाना है। यह एक रचनात्मक और मजेदार क्रिया है और की जा सकती है, बशर्ते इसका संचालक तत्पर उत्साही और प्रतिबद्ध हो। बेशक वह एक शिक्षक है, उसके इतना भर करने से बच्चे दिनचर्या का मीनिंग जान जाते हैं। अगर सी.सी.ई. यह बोध करा पाता है तो यह कम बात नहीं है, क्योंकि व्यक्ति अपनी दिनचर्या को सम्भालकर ही जिन्दगी में कामयाब होता है। दरअसल विभिन्न व्यक्तिगत योग्यताओं को अपने में लिए हुए बच्चों के समूह को संचालित करना आसान काम नहीं है,पर यह मुश्किल भी केवल तब है जब संचालक निष्क्रिय या सन्दर्भ रहित हो। सी.सी.ई. यह भी सिखाता है कि एक शिक्षक को कितना सजग होना चाहिए।

आखिर वह एक कक्षा को ड्राइव कर रहा होता है और उस पर बड़ी जवाबदारी है।

6 से 14 के बीच की आयु के बच्चे स्वभाव से चंचल होते हैं, और जब उन जैसे ही कई हों तो फिर आश्चर्य की बात नहीं कि वहाँ शोरगुल न होता हो, पर इस शोरगुल से इतना क्या घबराना। अगर शिक्षक थोड़ा-सा सूझबूझवाला हो तो वो इसका उपयोग कर सकता है कि बच्चे काम की बातें बोलने लगें। ऐसी समझ बनाने के लिए सी.सी.ई. के पास कुछ बातें हैं, प्रोजेक्ट कार्य करना, गतिविधियाँ कराना, रोचक तरीकों से विषयों की प्रकृति के अनुसार पढ़ाना, गृहकार्य जाँचना, टिप्पणी करना, अध्यापन से पहले तैयारी करना, बच्चों को प्रोत्साहित करना आदि।

ऐसे कुछ फार्मूले हैं जो सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के आधार हैं जो नए समय की शिक्षा पद्धति की रीढ़ हैं। मुझे लगता है कि ये विकल्प रहित उपाय हैं। जब कभी भी शिक्षा पद्धतियाँ अपने भीतर कुछ ठोस बदलाव का सपना देखेंगीं उन्हें साकार करने के लिए बेशक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन का दामन थामना ही पड़ेगा।

ब्रज श्रीवास्तव मध्य प्रदेश के विदिशा के शासकीय माध्यमिक विद्यालय में प्रधानाध्यापक हैं। उन्होंने जिला परियोजना कार्यालय, विदिशा में सर्व शिक्षा अभियान में सहायक परियोजना समन्वयक के रूप में काम किया है। वह राज्य संसाधन समूह के सदस्य रहे हैं। उन्होंने राज्य में सी.सी.ई. पायलट परियोजना और मूल्यांकन नीति के विकास में भी योगदान दिया है। कविता लिखने में उनकी रुचि है। उनकी कविताएँ और लेख कई प्रसिद्ध पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं, जैसे आउटलुक, इंडिया टुडे, साक्षात्कार, हंस, वागर्थ, वसुधा, जनसत्ता, नव दुनिया, राष्ट्रीय सहारा आदि। उनसे brajshrivastava7@gmail.com सम्पर्क किया जा सकता है।